ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 09
september 2015

परखते रहे वो हमें जिंदगीभर...
हम भी उनके हर इम्तहान में पास होते रहे...
मज़ा आ रहा था उनको हमारी आसूँ की बारिश में...
हम भी उनके लिए बिना रुके रोते रहे...
बेदर्द थे वो कुछ इस कदर...
नींद हमारी उड़ा कर वो खुद चैन से सोते रहे...
जिन्हें पाने के लिए हम ने सब कुछ लुटा दिया...
वो हमें हर कदम पे खोते रहे...
और,
एक दिन जब हुआ इसका एहसास उन्हें...
वो हमारे पास आकर...
पूरे दिन रोते रहे...
हम भी खुदगर्ज़ निकले, यारों...
कि आँखें बंद कर ली..
और,
कफ़न में चैन से सोते रहे...

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

With Regards

SureShot POST
New Delhi, India
email: post@sureshotpost.com

ISSN 2454-2695

Volume 02 Issue 09

september 2015

web: www.sureshotpost.com